योग्यता आवश्यक है कि मिथ्या अहंकार से मोहित न हो। अपने को प्रकृति का स्वामी समझकर बद्धजीव अभिमान से दृप्त हो रहा है, इसलिए उस के लिए श्रीभगवान् के शरणागत होना अति कठिन है। यथार्थ ज्ञान के अनुशीलन से जान लेना चाहिए कि प्रकृति का स्वामी वह नहीं है, श्रीभगवान् हैं। जब जीव अहंकारजनित मोह से मुक्त हो जाता है, तब शरणागत-पद्धति को अपना सकता है। जो मनुष्य इस प्राकृत-जगत् में सदा सत्कार चाहता रहता है, उसके लिए श्रीपुरुषोत्तम की शरण में जाना सम्भव नहीं। गर्व का मूल कारण मोह है, क्योंकि यद्यपि मनुष्य यहाँ आता है, कुछ काल तक ही रह पाता है और अन्त में चला जाता है, फिर भी मूर्खतावश अपने को संसार का ईश्वर समझ बैठता है। इस प्रकार वह स्वयं अपने लिए जटिल समस्या का कारण बन जाता है और परिणाम में निरन्तर कष्ट भोगता है। सम्पूर्ण संसार इस भ्रान्त धारणा के आधीन घूम रहा है। लोग समझते हैं कि यह भूमि मानवसमाज की है। अपने को भूमि का स्वामी समझने की इस मिथ्या धारणा के कारण वे नाना प्रकार से इसका विभाजन कर बैठे हैं। इस भ्रम का त्याग करना होगा कि इस संसार पर मनुष्यजाति का स्वामित्व है। इस से मुक्त होते ही मनुष्य परिवार, समाज और राष्ट्र आदि के स्नेह से होने वाले सभी असत्संगों से मुक्त हो सकता है। वस्तुतः इस संगदोष के कारण ही जीव का संसार-बन्धन है। इसके बाद, अध्यात्मविद्या का विकास करना है। विचार करना चाहिए कि वास्तव में अपना क्या है और क्या अपना नहीं है। इस सम्पूर्ण तत्त्व को जान लेने पर वह सुख-दुःख, आनन्द-विषाद आदि सब द्वन्द्वों से छूट कर पूर्ण ज्ञान से युक्त हो जाता है। तब वह श्रीभगवान् के शरणागत हो सकता है।

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।।६।।

न =न; **तत्** =उस परमधाम को; **भासयते** =प्रकाशित कर सकता है; **सूर्यः** =सूर्य; **न** =न; **शशांकः** =चन्द्रमा; **न** =न; **पावकः** =अग्नि; **यत्** =जिसे; **गत्वा** =प्राप्त होकर; **न निवर्तन्ते** =फिर संसार में नहीं आते; **तत् धाम** =वह धाम है; **परमम्** =परम; **मम** =मेरा।

अनुवाद

मेरे उस स्वयंप्रकाश धाम को न सूर्य प्रकाशित कर सकता है, न चन्द्रमा और न अग्नि ही प्रकाशित कर सकता है। जिसे प्राप्त हुआ जीव इस प्राकृत-जगत् में फिर नहीं आता, वही मेरा परमधाम है।।६।।

तात्पर्य

इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण के परमधाम का वर्णन है, जो कृष्णलोक अथवा गोलोक-वृन्दावन कहलाता है और वैकुण्ठ-जगत् में स्थित है। उस वैकुण्ठ-जगत् में सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि अथवा बिजली की अपेक्षा नहीं है, क्योंकि वहाँ के सब लोक स्वयंप्रकाश हैं। हमारे इस ब्रह्माण्ड में एकमात्र सूर्यलोक स्वयंप्रकाश है; परन्तु परव्योम के सब लोक स्वयंप्रकाश हैं। वैकुण्ठ-लोकों की इस दीप्ति को 'ब्रह्मज्योति